कार्यवृत्त
सोमवार, 28 बैशाख, शक संवत्, 1937
(दिनांक 18 मई, 2015 ई0)

खण्ड–42
अंक–10

विधान सभा का कार्य सभा मण्डप, देहरादून में अपराह्न के 04:00 बजे माननीय राष्ट्रपति, भारत, श्री राज्यपाल, उत्तराखण्ड एवं श्री अध्यक्ष के पीठासीन होने पर राष्ट्रगान ''जन–गण–मन'' के साथ आरम्भ हुआ।

श्री अध्यक्ष द्वारा भारत के मा0 राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी, मा0 राज्यपाल श्री के0के0पॉल जी, मा0 मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत जी, मा0 नेता प्रतिपक्ष श्री अजय भट्ट जी, मा0 मंत्रीगण, मा0 सदस्यगण, प्रतिष्ठित अतिथिगण, अधिकारीगण एवं पत्रकार बन्धुओं का आभार व्यक्त किया गया।

देव भूमि उत्तराखण्ड, अनेक महान विभूतियों स्वामी विवेकानन्द, गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की आराध्य तथा प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू जी की भी सदैव प्रिय होने की कड़ी में देश के प्रथम नागरिक के रूप में श्री प्रणब मुखर्जी का सामीप्य हमें प्राप्त हो रहा है जो कि स्मरणीय रहेगा।

श्री अजय भट्ट, नेता प्रतिपक्ष द्वारा मा0 राष्ट्रपति महोदय, मा0 राज्यपाल महोदय, मा0 स्पीकर महोदय, मा0 नेता सदन श्री हरीश रावत जी, सदन के सभी मा0 मंत्रीगण तथा सभी मा0 सदस्यों का आभार व्यक्त किया गया। मा0 राष्ट्रपति जी का आज का उद्बोधन हम सब के लिए पाथेय का काम करेगा।

श्री हरीश रावत, मा0 मुख्यमंत्री द्वारा मा0 राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी,, मा0 राज्यपाल श्री के0के0पॉल, मा0 अध्यक्ष विधान सभा श्री गोविन्द सिंह कुन्जवाल, मा0 नेता प्रतिपक्ष श्री अजय भट्ट जी, मा0 उपाध्यक्ष डा0 अनुसूया प्रसाद मैखुरी, मंत्रिमण्डल के सहयोगी एवं मा0 सदस्यण का आभार व्यक्त किया गया। आज हम समस्त विधान सभा सदस्य, सवा करोड़ उत्तराखण्ड वासियों की ओर से मा0 राष्ट्रपति जी का इस गौरवशाली सदन में हार्दिक स्वागत करते हैं। एक सक्षम उत्तरोत्तर प्रगति की ओर बढ़ते उत्तराखण्ड के निर्माण के लिए आपका सम्बोधन इस नवोदित राज्य के प्रत्येक पक्ष को प्रेरित करेगा।

डॉ0 कृष्ण कान्त पाल, मा0 राज्यपाल द्वारा मा0 राष्ट्रपति जी, मा0 विधान सभा अध्यक्ष, मा0 मुख्यमंत्री, मा0 नेता प्रतिपक्ष, मा0 मंत्रीगण एवं मा0 सदस्यगण का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड के लिए यह सौभाग्य की बात है कि भारत के राष्ट्रपति विधान सभा सदन को सम्बोधित करने के लिए आज हमारे बीच पधारे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर मा0 राष्ट्रपति के स्वागत हेतु यहां पर उपस्थित होना मेरे लिए विशेष गौरव का विषय है।

पर्वतीय राज्य के कठिन परिस्थितियों के बावजूद विधान सभा के सभी निर्वाचनों में पुरूषों की अपेक्षा महिला मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय रूप से हो रही बढ़ोत्तरी ने उत्तराखण्ड में महिलाओं की जागरूकता तथा लोकतंत्र के प्रति उनकी आस्था का सुखद संदेश दिया है।

मा0 राज्यपाल द्वारा एक स्वच्छ, पारदर्शी, सक्रिय तथा जवाबदेह सुशासन के आधार पर अपने कार्य–दायित्वों का निष्पादन करने के लिए प्रतिबद्ध अपनी सरकार से अवगत कराते हुए पुनः मा0 राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए धन्यवाद सहित मार्गदर्शन किये जाने का अनुरोध किया गया।

श्री प्रणब मुखर्जी, मा0 राष्ट्रपति, भारत द्वारा डॉ कृष्ण कान्त पाल, राज्यपाल, उत्तराखण्ड, श्री गोविन्द सिंह कुन्जवाल, मा0 अध्यक्ष, उत्तराखण्ड विधान सभा, श्री हरीश रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड, नेता प्रतिपक्ष, उत्तराखण्ड विधान सभा के सदस्यगण का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विधान सभा को सम्बोधन किये जाने हेतु मा0 अध्यक्ष, श्री गोविन्द सिंह कुन्जवाल की ओर से प्राप्त आमंत्रण से मुझे

सचमुच हर्ष हुआ तथा इस भव्य सदन में उपस्थित होने पर विशेषकर हर्षित हूॅ। सचमुच उत्तराखण्ड 'देव भूमि' है, देवताओं का निवास है।

मा0 राष्ट्रपति ने कहा कि प्रत्येक विधायक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बहस संतुष्ट करने वाली और विशेषता युक्त होनी चाहिए। साथ ही श्री एस0 सत्यमूर्ति के उद्धरण सहित सदन से संबंधित अन्य जानकारियों, प्रश्नों तथा अन्य क्रियाकलापों से रूबरू कराते हुए श्री सुमित्रानन्द पन्त की कुछ निम्न पंक्तियों सहित अपने सम्बोधन का समापन किया:–

कोटि–कोटि हम श्रमजीवी सुत,
सर्व एक मत, एक ध्येय रत,
जय भारत हे,
जाग्रत भारत हे।

श्रीमती इन्दिरा हृदयेश, मा0 संसदीय कार्य मंत्री द्वारा परम सम्मानित राष्ट्रपति जी, मा0 राज्यपाल जी, मा0 अध्यक्ष जी, मा0 मुख्यमंत्री जी, मा0 नेता प्रतिपक्ष जी, सभी सहयोगी मंत्रिमण्डल के सम्मानित सदस्यगण एवं सभी सम्मानित विधायकगण का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस ऐतिहासिक दिन में आपकी गौरवमयी उपस्थिति से हम सब गौरवान्वित हुए हैं। पुनः मा0 राष्ट्रपति जी का स्वागत करते हुए धन्यवाद ज्ञापित कर प्रस्ताव किया कि यह सदन अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया जाए।

'राष्ट्रगान' के साथ सदन की कार्यवाही 05 बजकर 10 मिनट पर अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई।

जगदीश चन्द्र
सचिव,
विधान सभा।

स्वीकृत,

गोविन्द सिंह कुंजवाल
अध्यक्ष,
विधान सभा।